पाठ्यक्रम संरचना
कक्षा–XI
विषय– व्यवसाय अध्ययन – (302)

पूर्णांक–100

सैद्धांतिक – 80
प्रायोजना – 20

स.क्र.	इकाई एवम् पाठ्यवस्तु	आंबटित अंक	कालखण्ड
	भाग – 1 व्यावसाय के आधार		
1.	व्यवसाय, व्यापार और वाणिज्य	08	20
2.	व्यावसायिक संगठन के स्वरूप	08	25
3.	निजी, सार्वजनिक एवं भूमण्डलीय उपक्रम	07	15
4.	व्यावसायिक सेवाएँ	07	15
5.	व्यवसाय की उभरती पद्धतियाँ	04	10
6.	व्यवसाय का सामाजिक उत्तरदायित्व एवं व्यावसायिक नैतिकता	06	15
	भाग – 2 व्यावसायिक संगठन, वित्त एवं व्यापार		
7.	कंपनी निर्माण	08	20
8.	व्यावसायिक वित्त के स्त्रोत	07	15
9.	सूक्ष्म, लघु तथा मध्यम उद्यम और व्यवसायिक उद्यमिता	09	25
10.	आंतरिक व्यापार	08	20
11.	अंतराष्ट्रीय व्यापार	08	20
	योग –	**80**	**200**
	प्रायोजना –	**20**	**20**
	महायोग –	**100**	**220**

प्रश्नपत्र योजना
कक्षा–XI
विषय– व्यवसाय अध्ययन – (302)

कुल अंक– 80 **समय – 3:00 घंटे**

"A" - प्रश्नानुसार अंक विभाजन

क्र0	शैक्षिक उद्देश्य	वस्तुनिष्ठ (MCQ/ VSA) 01	लघु उत्तरीय (SA-I) 02	लघु उत्तरीय (SA-II) 03	दीर्घ उत्तरीय (LA) 04	अतिदीर्घ उत्तरीय (VLA) 06	कुल अंक	% अधिमार
1.	**ज्ञानात्मक (Knowledge)** परिभाषा, सिद्धांत, तथ्यों को पहचानना, सूचना इत्यादि पर आधारित स्मरण क्षमता पर आधारित प्रश्न	05	02	01	01	-	16	20%
2.	**अवबोधात्मक (Understanding)** अर्थ, व्याख्या, अंतर स्पष्ट करना, वैचारिक समझ, भावानुवाद	02	01	-	01	02	20	25%
3.	**अनुप्रयोगात्मक (Application)** उदाहरण सहित/संदर्भ और समझ के आधार पर दी गई नयी परिस्थितियों को समझना /सिद्धांत के समाधान/हल निकालना	02	01	02	01	01	20	25%
4.	**विश्लेषणात्मक (Analysis)** वर्गीकृत, तुलनात्मक, व्याख्या विभिन्न स्त्रोतो पर आधारित विशेष जानकारी को समाहित करना/एकीकरण/सुसंगठित करना/अंतर	01	-	01	01	-	08	10%
5.	**मूल्यांकन (Evaluation)** मूल्यांकन करना/समीक्षा करना/मूल्य निर्धारण /निष्कर्ष निकालना/चयन करना/ तर्क आधारित	-	01	-	-	01	08	10%
6.	**रचनात्मक (Creation/Creativity)** सृजन करना/पुर्वानुमान/योजना बनाना/ परिकल्पना /संगठित करना	-	-	-	02	-	08	10%
	योग	**1 (10) = 10**	**2 (05) = 10**	**3 (04) =12**	**4 (06) =24**	**6(04) =24**	**80**	**100%**

"B" - प्रश्नानुसार विभाजन

क्र0	प्रश्नों का प्रकार	प्रत्येक प्रश्न पर आबंटित अंक	कुल प्रश्न	कुल अंक
1.	वस्तुनिष्ठ प्रश्न (MCQ/VSA)	**01**	**1(10)**	**10**
2.	लघुउत्तरीय प्रश्न (SA-I)	**02**	**05**	**10**
3.	लघुउत्तरीय प्रश्न (SA-II)	**03**	**04**	**12**
4.	दीर्घउत्तरीय प्रश्न (LA)	**04**	**06**	**24**
5.	अति दीर्घउत्तरीय प्रश्न (VLA)	**06**	**04**	**24**
		कुल योग	**19+1 (10)**	**80**

"C" - कठिनाई स्तर अनुसार अंक विभाजन

क्र0	कठिनाई स्तर	अंक	प्रतिशत
1.	सरल (E)	24	30%
2.	औसत (AV)	40	50%
3.	कठिन (D)	16	20%
	कुल योग	**80**	**100%**

परिशिष्ट – "C"

ब्लूप्रिंट
कक्षा–XI
विषय– व्यवसाय अध्ययन – (302)

कुल अंक – 80 समय – 3:00 घंटे

"A" - प्रश्नानुसार अंक विभाजन

क्र0	इकाई एवम् पाठ्यवस्तु	अंको का अधिमार	वस्तुनिष्ठ (MCQ /VSA) 01	लघु उत्तरीय (SA-I) 02	लघु उत्तरीय (SA-II) 03	दीर्घ उत्तरीय (LA) 04	अतिदीर्घ उत्तरीय (VLA) 06	कुल अंक	कुल प्रश्नों की संख्या
	भाग – 1 व्यावसाय के आधार								
1.	व्यवसाय, व्यापार और वाणिज्य	**08**	01	-	01	01*	-	**08**	**2(1)**
2.	व्यावसायिक संगठन के स्वरूप	**08**	02	-	-	-	**01***	**08**	**1(2)**
3.	निजी, सार्वजनिक एवं भूमण्डलीय उपक्रम	**06**	-	01	-	01*	-	**06**	**2(0)**
4.	व्यावसायिक सेवाएँ	**07**	01	-	-	-	**01***	**07**	**1(1)**
5.	व्यवसाय की उभरती पद्धतियाँ	**05**	-	01	01	-	-	**05**	**2(0)**
6.	व्यवसाय का सामाजिक उत्तरदायित्व एवं व्यावसायिक नैतिकता	**06**	02	-	-	01*	-	**06**	**1(2)**
	भाग – 2 व्यावसायिक संगठन, वित्त एवं व्यापार								
7.	कंपनी निर्माण	**08**	01	-	01	01*	-	**08**	**2(1)**
8.	व्यावसायिक वित्त के स्त्रोत	**07**	01	01	-	01*	-	**07**	**2(1)**
9.	सूक्ष्म, लघु तथा मध्यम उद्यम और व्यवसायिक उद्यमिता	**09**	01	01	-	-	**01***	**09**	**2(1)**
10.	आंतरिक व्यापार	**08**	01	-	01	01*	-	**08**	**2(1)**
11.	अंतराष्ट्रीय व्यापार	**08**	-	01	-	-	**01***	**08**	**2(0)**
	योग	**80**	**1 (10) = 10**	**2 (05) = 10**	**3 (04) =12**	**4 (06) =24**	**6 (04) =24**	**80**	**19+1 (10) =20**

नोट :–

01. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के दो भाग होंगे। खण्ड 'अ' में 05 बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ) एवं खण्ड 'ब' में 05 अतिलघुउत्तीय (VSA) प्रश्न होंगे।
02. * तारांकित प्रश्नों में विकल्प दिए जायेंगे।
03. महायोग में कोष्ठक के बाहर की संख्या अंको को दर्शाती है तथा कोष्ठक के अंदर की संख्या प्रश्नों की संख्या को दर्शाती है।

प्रश्नपत्र संरचना
कक्षा – 11वीं
विषय – व्यवसाय अध्ययन (302)

कुल अंक – 80 **समय – 3:00 घंटे**

1. प्रश्न क्र0–01 वस्तुनिष्ठ प्रश्न है जिसमें दो खण्ड होंगे :–

(i) **"खण्ड–अ" में 05** बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ) है। प्रत्येक में 01 अंक निर्धारित है।

(ii) **खण्ड–"ब" में 05** अतिलघुउत्तरीय (VSA) प्रश्न होंगे। प्रत्येक में 01 अंक निर्धारित है।

2. प्रश्न क्र0–02 से प्रश्न क्र0–06 तक लघुउत्तरीय प्रश्न (SA-I) होगें, प्रत्येक में 02 अंक निर्धारित है। शब्द सीमा 30

3. प्रश्न क्र0–07 से प्रश्न क्र0–10 तक लघुउत्तरीय प्रश्न (SA-II) होगें, प्रत्येक में 03 अंक निर्धारित है। शब्द सीमा 50

4. प्रश्न क्र0–11 से प्रश्न क्र0–16 तक दीर्घउत्तरीय प्रश्न (LA) होगें, प्रत्येक में 04 अंक निर्धारित है। शब्द सीमा 75–100 शब्द

5. प्रश्न क्र0–17 से प्रश्न क्र0–20 तक अति दीर्घउत्तरीय (VLA) होगें, जिसमें प्रत्येक में 05 अंक निर्धारित है। शब्द सीमा 150–200 शब्द

6. प्रश्न क्र0–11 से प्रश्न क्र0–20 तक प्रत्येक प्रश्न में आंतरिक विकल्प रहेंगे।

पाठ्यक्रम
कक्षा – XI
विषय – व्यवसाय अध्ययन (302)

भाग – 1 व्यावसाय के आधार **अंक 40 कालखण्ड 100**

अध्याय – 1 व्यवसाय, व्यापार और वाणिज्य –

प्रस्तावना, अर्थव्यवस्था के विकास में व्यवसाय की भूमिका, व्यवसाय की प्रकृति और अवधारणा, व्यवसाय की अवधारणा– व्यवसायिक क्रियाओं की विशेषताएं, व्यवसाय पेशा तथा रोजगार में तुलना, व्यवसायिक क्रियाओं का वर्गीकरण– उद्योग वाणिज्य, व्यापार, व्यापार एवं व्यापार के सहायक, व्यवसाय के उद्देश्य– व्यवसायिक जोखिम – व्यवसायिक जोखिमों की प्रकृति, व्यवसायिक जोखिमो के कारण, व्यवसाय शुरू करना–मूल कारण।

अध्याय – 2 व्यावसायिक संगठन के स्वरूप –

परिचय, एकल स्वामित्व, संयुक्त हिन्दू परिवार व्यवसाय – लक्षण, गुण, सीमाएं, साझेदारी, लक्षण, गुण सीमाएं, साझेदारों के प्रकार, साझेदारी के प्रकार, साझेदारी संलेख, पंजीकरण, सहकारी संगठन, लक्षण, गुण सीमाएं, सहकारी समितियों के प्रकार, संयुक्त पूंजी कंपनी, लक्षण, गुण सीमाएं, कंपनियों के प्रकार, व्यवसायिक संगठन के स्वरूप का चयन।

अध्याय – 3 निजी, सार्वजनिक एवं भू मण्डलीय उपक्रम –

परिचय, सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के संगठनों का स्वरूप – विभागीय उपक्रम, वैधानिक निगम, सरकारी कंपनी, सार्वजनिक क्षेत्र की बदलती भूमिका, भूमण्डलीय उपक्रम– विशेषताएं, सार्वजनिक निजी भागीदारी, (पी.पी.पी.)।

अध्याय – 4 व्यावसायिक सेवाएँ

परिचय, सेवाओं की प्रकृति, सेवाओं के प्रकार – व्यावसायिक सेवाएं, बैकिंग– बैंकों के प्रकार, वाणिजयिक बैंक के कार्य, ई बैकिंग, बीमा– बीमा का आधारभूत सिद्धांत बीमा के कार्य, बीमा के सिद्धांत, बीमा के प्रकार, संप्रेषण सेवाएं– डाक सेवाएं, टेलीकॉम सेवाएं, परिवहन।

अध्याय – 5 व्यवसाय का उभरती पद्धतियां –

परिचय, ई–व्यवसाय – ई–व्यवसाय का कार्य क्षेत्र, ई–व्यवसाय के लाभ, ई–व्यवसाय की सीमाएं, ऑनलाईन लेनदेन, ई– लेनदेनों की सुरक्षा एवं बचाव, सफल ई–व्यवसाय कार्यान्वयन के लिए आवश्यक संसाधन।

अध्याय – 6 व्यवसाय का सामाजिक उत्तरदायित्व एवं व्यावसायिक नैतिकता –

परिचय, सामाजिक उत्तरदायित्व की अवधारणा, सामाजिक उत्तरदायित्व की आवश्यकता– सामाजिक उत्तरदायित्व के पक्ष में तर्क, सामाजिक उत्तरदायित्व के मुख्य, विपक्ष में मुख्य तर्क, सामाजिक उत्तर दायित्व की यथार्थ वादिता, सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रकार, व्यवसाय का विभिन्न संबंधित वर्गो के प्रति उत्तरदायित्व, व्यवसाय तथा पर्यावरण संरक्षण– प्रदूषण के प्रकार, प्रदूषण नियंत्रण की आवश्यकता, पर्यावरण संरक्षण में व्यवसाय की भूमिका, व्यवसायिक नैतिकता– व्यवसायिक नैतिकता की अवधाणा, व्यवसायिक नैतिकता के तत्व।

अंक 40 कालखण्ड 100

भाग – 2 व्यावसायिक संगठन, वित्त एवं व्यापार

अध्याय – 7 कंपनी निर्माण –

परिचय, कंपनी की संरचना– कंपनी प्रवर्तन, समामेलन, पूँजी अभिदान, जमा किए जाने वाले आवश्यक प्रलेख।

अध्याय – 8 व्यावसायिक वित्त के स्त्रोत –

परिचय, व्यवसायिक वित्त का अर्थ, प्रकृति एवं महत्व, वित्त/धन के स्त्रोतो का वर्गीकरण– अवधि के आधार पर, स्वामित्व के आधार पर, आंतरिक एवं बाह्य सुविधाओं के आधार पर, वित्त के स्त्रोत– संचित आय, व्यापारिक साख, आढ़त, लीज वित्तीयन, सार्वजनिक जमा, वाणिज्यिक पत्र, अंशो का निर्गमन, ऋण पत्र, वाणिज्यिक बैंक, वित्तीय संस्थान, कोषों के स्त्रोत के चयन को प्रभावित करने वाले तत्व।

अध्याय – 9 सूक्ष्म, लघु तथा मध्यम उद्यम और व्यवसायिक उद्यमिता –

प्रस्तावना, सूक्ष्म, लघु तथा मध्यम उद्यम, सूक्ष्म, लघु तथा मध्यम उद्यम की भूमिका, सूक्ष्म, लघु तथा मध्यम उद्यमों के साथ जुडी समस्याएं, सूक्ष्म, लघु तथा मध्यम उद्यम और उद्यमिता का विकास, बौद्धिक संपदा अधिकार (आई0पी0आर0) – उद्यमियों के लिए बौद्धिक संपदा अधिकार कयों महत्वपूर्ण है?, बौद्धिक संपदा अधिकार के प्रकार।

अध्याय – 10 आंतरिक व्यापार –

परिचय, आंतरिक व्यापार, थोक व्यापार– विनिर्माताओं के प्रति सेवाएं, फुटकर विक्रेताओं के प्रति सेवाएं, फुटकर व्यापार– उत्पादकों एवं थोक विक्रेताओं की सेवाएं, उपभोक्ताओं को सेवाएं, माल एवं सेवा कर (जी.एस.टी.), फुटकर व्यापार के प्रकार – भ्रमणशील फुटकर विक्रेता, स्थायी दुकानदार।

अध्याय – 11 अंर्तराष्ट्रीय व्यापार –

परिचय, अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय/व्यापार का अर्थ – अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय के कारण, अंर्तर्राष्ट्रीय व्यवसाय बनाम घरेलू व्यवसाय, अंर्तर्राष्ट्रीय व्यवसाय का क्षेत्र, अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय के लाभ, अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय मे प्रवेश की विधियां – आयात एवं निर्यात, संविदा विनिर्माण, अनुज्ञप्ति लाइसैंस एवं मताधिकारी, संयुक्त उपकरण, संपूर्ण स्वामित्व वाली सहायक इकाईया/कंपनियाँ, आयात निर्यात प्रक्रिया – निर्यात प्रक्रिया, आयात प्रक्रिया, विदेशी व्यापार प्रोन्नति – प्रोत्साहन एवं संगठनात्मक समर्थन – विदेशी व्यापार प्रोन्नति विधियां एवं योजनाएं, संगठन समर्थन, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार संस्थान एवं व्यापार समझौते – विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आई.एम.एफ.), विश्व व्यापार संगठन (डब्लू.टी.ओ.) एवं प्रमुख समझौते,

योग –	**80**	**200**
प्रायोजना –	**20**	**20**
महायोग –	**100**	**220**

प्रायोजना कार्य (Project Work)
कक्षा–XI
विषय– व्यवसाय अध्ययन (302)

अधिकतम अंक : 20 अंक
(Max. Marks 20)

समय : 2:00 घंटे
(Time : Two Hours)

मूल्यांकन योजना

स.क्र. S.No.	विषयवस्तु (Heading)	अंक Marks allotted
1.	प्रायोजना रिकार्ड	04
2.	प्रायोजना कार्य / परीक्षा	
	• प्रस्ताव, सहयोगिता एवं सहभागिता	02
	• प्रस्तुतीकरण में सृजनात्मकता	02 — 12
	• विषयवस्तु, अवलोकन एवं अनुसंधान कार्य	04
	• पारिस्थितियों का विश्लेषण	04
3.	मौखिक (Viva)	04
	कुल अंक (Total)	**20 अंक** 20 Marks

टीप – प्रायोजना कार्ययोजना पूर्ववत् यथावत् है।

व्यवसाय अध्ययन (302)

कक्षा – 11 वीं

प्रायोजना कार्य

उद्देश्य :–

प्रायोजना कार्य से छात्रों को निम्न जानकारी प्राप्त होगी :–

1. आधुनिक प्रौद्योगिकी का उपयोग कर व्यापार एवं प्रबंधन के क्षेत्र में व्यावहारिक दृष्टिकोण विकसित करना।
2. व्यवसाय प्रबंधन तथा उससे संबंधित सेवाओं के क्षेत्र में संचालन का अवसर प्राप्त होना।
3. टीम वर्क, समस्या समाधान, समय प्रबंधन, सूचना संग्रहण प्रक्रिया के महत्त्वपूर्ण कौशल विकास के साथ–साथ उपयुक्त सूचनओं के सश्लेषण एवं विश्लेषण द्वारा सार्थक निष्कर्ष पर पहुँचना।
4. अनुसंधान कार्य की प्रक्रिया में शामिल होना।
5. स्वतंत्र कार्य करते हुये स्वयं की क्षमताओं का प्रदर्षन तथा प्रायोजना अध्ययन में मनोरंजक अनुभव प्राप्त करना।

शिक्षक के लिये निर्देश :–

शिक्षकों हेतु छात्रों को प्रायोजना कार्य देते समय वार्तालाप, सहयोग, मार्गदर्शन, सुविधा, तथा प्रोत्साहन अत्यंत आवश्यक है। शिक्षक एकल या समूह में छात्रों को प्रायोजना कार्य करवा सकते है तथा छात्रों द्वारा प्रायोजना को अंतिम रूप देते समय शिक्षक को यह सुनिश्चित करना चाहिये कि प्रायोजना कार्य के प्रत्येक चरण में ड्राफ्ट समीक्षा की जाये। सम्पूर्ण शैक्षणिक सत्र में प्रायोजना कार्य हेतु 16 कालखण्ड निर्धारित किए जाए। छात्र द्वारा स्वयं प्रायोजना कार्य किये जाने की सुनिश्चितता शिक्षक द्वारा अवश्य की जाना चाहिये ताकि छात्र व्यावसायिक तैयार (रेडीमेड) प्रायोजना का उपयोग न कर सके।

प्रायोजना के पद :–

1. कक्षा 11 वीं के शैक्षणिक सत्र में किसी एक प्रायोजना का चयन करना चाहिये।
2. प्रायोजना कार्य व्यक्तिगत रूप से अथवा सामूहिक किया जा सकता है।
3. कक्षा में छात्रों से चर्चा उपरांत ही रूचि अनुरूप प्रायोजना कार्य सौंपा जाना चाहिये। तथा प्रायोजना समाप्ति के प्रत्येक पद पर चर्चा तथा आवश्यकतानुसार समाधान किया जाना चाहिये।

4 शिक्षक को एक सुविधाप्रदाता की भूमिका निभानी चाहिए। तथा प्रायोजना समाप्ति की प्रक्रिया का बारीकी से अवलोकन किया जाना चाहिये।

5. शिक्षकों को यह सुनिश्चित किया जाना चाहिये कि छात्र प्रायोजना कार्य करने एवं इसे आगे बढ़ाने में सक्षम है तथा प्रायोजना कार्य को सहज रूप से बिना तनाव से करे।
6. छात्रों की संचार कौशल क्षमता तथा आत्मविश्वास विकसित करने हेतु प्रायोजना कक्षा में पावर पाइन्ट के माध्यम से या प्रदर्शन के माध्यम से प्रस्तुतीकरण कराया जाना चाहिये।

शिक्षक को विद्यार्थियों को निम्नानुसार दिये गये प्रायोजना कार्य में से एक प्रायोजना चयन में मदद की जानी चाहिये।

प्रायोजना 1 :– क्षेत्र भ्रमण

यह विद्यार्थियों को अपने परिवेश में उपस्थित सक्रिय व्यावसायिक इकाईयों की विशेषताओं को समझने में सहायक होगा :–

विद्यार्थियों द्वारा स्वयं के परिवेश अनुसार निम्न में से किसी एक क्षेत्र का चयन प्रायोजना हेतु करना चाहिये :–

- एक हस्तशिल्प (हेण्डीक्राप्ट) इकाई
- कोई भी औद्योगिक इकाई
- थोक बाजार, (सब्जियाँ, फल, फूल, अनाज, वस्त्र इत्यादि)
- किसी डिपार्टमेंटल स्टोर का
- किसी मॉल का

- **हेण्डीक्राप्ट इकाई का भ्रमण :–** इसका उद्देश्य प्रकृति तथा व्यापार के अवसर को समझना है। भ्रमण करते समय निम्न बिन्दु प्रायोजना हेतु ध्यान रखे जाये।

1. कच्चा माल, तथा व्यापार में उपयोग करने की प्रक्रिया, लोग/पार्टी/फर्म/ जिनसे कच्चा माल प्राप्त किया जाता है।
2. बाजार, खरीददार, बिचौलियों तथा क्षेत्र को शामिल करना।
3. सामान को बनाकर निर्यात किये जाने वाला शहर।
4. श्रमिकों, कर्मचारियों, तथा सप्लायर्स के भुगतान की विधि।
5. कार्य करने की परिस्थितियाँ।
6. एक अवधि पश्चात् प्रक्रिया का आधुनिकीकरण
7. स्टाफ तथा कर्मचारियों के लिये उपलब्ध सुविधायें, सुरक्षा, प्रशिक्षण

8. स्थानीय परिवेश के अनुसार किसी हेण्डीक्राप्ट इकाई (बस्तर का बेल मेटल कला, टेराकोटा, अन्य शिल्पकला) का चयन सुविधानुसार किया जा सकता है।
9. शिक्षक को उचित प्रतीत अन्य कोई बिन्दु।

- **औद्योगिक इकाई का भ्रमण :–** छात्रों को निम्नानुसार अवलोकन आवश्यक है;
  1. व्यापार संगठन की प्रकृति
  2. व्यापार इकाई के लिये स्थान निर्धारण
  3. व्यावसायिक उद्यम का स्वरूप – एकल स्वामित्व, साझेदारी, अविभाजित हिंदू परिवार, संयुक्त स्टाफ कंपनी (एक बहुराष्ट्रीय कंपनी)
  4. प्रक्रिया/उत्पादन के विभिन्न पद
  5. प्रक्रिया में शामिल सहायक
  6. कार्यरत कर्मचारी, पारिश्रामिक भुगतान की विधि, प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा उपलब्ध सुविधायें।
  7. कर्मचारियों, निवेशकों, समाज, पर्यावरण तथा सरकार के प्रति जिम्मेदारियाँ।
  8. प्रबंधन के स्तर
  9. नियोक्ताओं तथा कर्मचारियों हेतु आचार संहिता।
  10. नियोक्ता का पूंजी संरचना – Borrowed v/s Owned
  11. गुणवत्ता नियंत्रण, खराब सामग्री का पुनः चक्रण (Recycling)
  12. सब्सिडी उपलब्धता/उपयोगिता
  13. सुरक्षा के नियोजित उपाय
  14. श्रम कानूनों के अवलोकन द्वारा श्रमिक हेतु कार्य शर्तें।
  15. कच्चा माल तथा तैयार माल का भण्डारण
  16. कर्मचारियों, कच्चा माल तथा तैयार माल का परिवहन प्रबंधन
  17. विभिन्न विभागों की कार्यप्रणाली तथा सामंजस्य (उत्पादन, मानव संसाधन वित्त एवं विपणन)
  18. अपशिष्ट प्रबंधन
  19. अन्य विशेष अवलोकन

- **थोक बाज़ार, (सब्जियाँ, फल, फूल, अनाज, वस्त्र इत्यादि) भ्रमण :–**

छात्रों को निम्नानुसार अवलोकन आवश्यक है।

1. माल का स्त्रोत
2. स्थानीय बाजार की प्रथा
3. कोई लिंकअप कारोबार जैसे ट्रांसपोर्टर्स, पैकेजर्स, मनीलैण्डरर्स, एजेंट इत्यादि।
4. सौदे (निपटान) में माल की प्रकृति।

5. खरीददारों और विक्रेताओं के प्रकार।
6. माल भेजने का तरीका, क्रय न्यूनतम मात्रा, पैकेजिंग का प्रकार।
7. मूल्य उतार – चढ़ाव निर्धारित करने वाले कारक।
8. व्यापार को प्रभावित करने वाले मौसमी कारक (Seasonal factor)
9. साप्ताहिक/मासिक गैर कार्य दिवस
10. हड़ताल (यदि हाँ तो संबंधित कारण)
11. भुगतान का तरीका।
12. Dead stock का अवशेष तथा Disposal (निपटान)
13. मूल्य अस्थिरता की प्रकृति एवं कारण।
14. माल गोदाम उपलब्धता लाभ/सुविधायें।
15. अन्य कोई दृष्टिकोण।

- **डिपार्टमेंटल स्टोर का भ्रमण :–**

छात्रों को निम्नानुसार अवलोकन आवष्यक है।

1. विभिन्न डिपार्टमेंटल स्टोर एवं उनके लेआऊट
2. विक्रय के लिये प्रस्तुत उत्पाद की प्रकृति।
3. ताजे उपलब्ध उत्पादों का प्रदर्षन
4. विज्ञापन संबंधी अभियान।
5. स्थान तथा विज्ञापन।
6. Sales Personnel (विक्रय कर्मचारी) द्वारा सहयोग।
7. स्टोर में बिलिंग काऊन्टर – कैश, क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, स्वाईप सुविधा तथा काऊन्टर पर अतिरिक्त आकर्षण सुविधाएँ।

- **मॉल का भ्रमण :–**

1. मंजिलों की संख्या अधिकृत तथा अनाधिकृत दुकानें।
2. दुकानों की प्रकृति तथा उनके मालिकाना हक की स्थिति।
3. सामानों के व्यापार की प्रकृति – लोकल ब्रांड तथा अर्न्तराष्ट्रीय ब्रांड
4. सेवा व्यवसाय दुकानें – स्पा, जिम, सेलून्स आदि।
5. किरायें का स्थान/स्वामित्व का स्थान।
6. विभिन्न प्रकार की विज्ञापन योजनाएँ।
7. सर्वाधिक देखे जाने वाली दुकानें।
8. माल का विशेष आकर्षण – फूड कोर्ट, खेल जोन या सिनेमा आदि।
9. नवाचारी सुविधायें तथा पार्किंग सुविधायें।

टीप :– विद्यार्थी अपने परिवेश के अनुसार मड़ई/मेला भ्रमण को भी तथा अन्य कोई उपयुक्त विषय प्रायोजना हेतु चयन कर सकते है। इस हेतु प्रायोजना संबंधित प्रश्नावली शिक्षक के सहयोग से एवं मार्गदर्शन द्वारा तैयार किया जाना चाहिये।

प्रायोजना दो

II. (a) प्रोजेक्ट दो – उत्पादों पर केस अध्ययन

(a) ऐसे उत्पाद से छात्रों को प्रायोजना हेतु जोड़ें जो सदैव मांग में रहते हो व मौसमी (सीजनल) हो।

1. हिमाचल के सेब
2. नागपुर के संतरे
3. महाराष्ट्र/बिहार/आंध्रप्रदेष/यू.पी. के आम
4. पचगेनी की स्ट्राबेरी
5. छत्तीसगढ़ का चांवल
6. रायगढ़ का कोसां
7. असम की चाय
8. नार्थ ईस्ट इंडिया से पाइनएप्पल

अन्य स्थानीय परिवश अनुसार उदाहरण लिये जा सकते है।

III. प्रायोजना तीन :

व्यापार (Aids to Trade) :– किसी व्यापार से उदाहरण स्वरूप बीमा संबंधी निम्न बिंदुओं पर जानकारी एकत्र करना

1. बीमा लॉयड के योगदान का इतिहास
2. नियामक तंत्र का विकास
3. भारत की बीमा कंपनियाँ
4. बीमा के सिद्धांत
5. बीमा के प्रकार – व्यापारी के लिए बीमा का महत्व
6. फसलों, बागों, पशु, मुर्गीपालन बीमा से किसानों को लाभ
7. उपयोग की गई शब्दावली (प्रीमियम, अंकित मूल्य, व्यापार मूल्य, परिपक्वतामूल्य संपूर्ण मूल्य) तथा उनके कार्य
8. बीमा कंपनी के रूचिकर तथा उपाख्यानों (anecdotes) मामले/बीमा कंपनी के साथ धोखाधड़ी संदर्भित फिल्मों का चित्रण
9. बीमा में केरियर

IV. प्रायोजना चार –

आयात/निर्यात प्रक्रिया :– छात्रों को अपने शहर में आयात/निर्यात किये जाने वाले सामान की पहचान होनी चाहिये वे चेम्बर ऑफ कामर्स, बैंकर, आयात/निर्यातक : इत्यादि इसके अतिरिक्त रेल्वे गोदाम में भी छात्र भ्रमण कर सकते है। प्रायोजना रिपोर्ट की तैयारी एवं प्रस्तुतीकरण हेतु निम्न जानकारी लेना आवश्यक है।

1. संपूर्ण प्रायोजना एक फाइल प्रारूप में होगी। जिसमें शेयर तथा ग्रॉफ्स के मूल्य का रिकार्ड होना चाहिए।
2. परियोजना हस्तलिखित होना चाहिए।
3. प्रायोजना स्पष्ट व स्वच्छतापूर्वक फोल्डर में होनी चाहिए।

प्रायोजना रिपोर्ट निम्न पदों में तैयार की जानी चाहिए।

1. कवर पेज में प्रोजेक्ट का शीर्षक, विद्यार्थी संबंधी जानकारी, शाला तथा सत्र का उल्लेख होना चाहिए।
2. सामग्री की सूची
3. प्रस्तावना तथा आभार
4. परिचय
5. उचित शीर्षक के साथ चयनित विषय
6. प्रयोजना कार्य के दौरान योजना एवं कार्यप्रणाली
7. प्रयोजना कार्य के दौरान अवलोकन तथा निष्कर्ष
8. शेयर कीमतो पर परिवर्तन को न्यूजपेपर द्वारा दिखाना
9. निष्कर्ष (भविष्य मे अध्ययन अवसर हेतु सुझाव या निष्कर्ष)
10. परिशिष्ट
11. शिक्षक की रिपोर्ट
12. प्रायोजना के प्रथम पृष्ठ पर शिक्षक हस्ताक्षर करे
13. प्रयोजना का मूल्यांकन, कार्य पूर्ण होने पर इसमें केन्द्र (संस्था) में छिद्रण किया जाए ताकि इसका पुनः उपयोग न किया जा सके (केवल संदर्भ हेतु)
14. प्रोजेक्ट मूल्यांकन पश्चात छात्रों को वापस किया जाएगा। श्रेष्ठ प्रोजेक्ट को शाला में रखा जा सक

V. प्रायोजना पाँच – स्टेट एम्पोरियम भ्रमण

इस प्रयोजना का उददेश्य है।

1. विभिन्न राज्यों के उत्पादों की विविधता की गहरी समझ विकसित करना।
2. अन्य राज्यों, उसकें व्यापार, व्यवसाय व वाणिज्य के प्रति संवेदनशीलता तथा उन्मुखीकरण।
3. राज्यों की सांस्कृतिक तथा सामाजिक आर्थिक पहलुओं को छात्रों को समझना
4. राज्यों के उन्नति व आर्थिक विकास में राज्य की लोककलाएँ, कारीगरी, शिल्प कौशल की भूमिका को समझना
5. प्रकृति के उपहार तथा प्राकृतिक उत्पादन का व्यापार, व्यवसाय तथा वाणिज्य की भूमिका को समझना।
6. कलाकार/कारीगर की आजीविका पर व्यवसायिक कौशल तथा योग्यता की भूमिका को समझना।
7. कलाकारों/कारीगरों की उद्यमी क्षमताओं तथा योग्यंताओं को समझना।
8. राज्य में बेरोजगारी समस्या तथा कला/शिल्प से राज्य में रोजगार की संभावनाओं अवसर उत्पन्न करने को समझना।

Value Aspect

1. आभार व्यक्त करने भावना
2. कार्य की गरिमा को प्रोत्साहन
3. सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक तथा धार्मिक मतभेद के प्रति संवेदनशीलता
4. भारत में विविधता में एकता की समझ तथा प्रशंसा

निर्धारित अवधि के अंत में प्रत्येक छात्र अपनी प्रायोजना रिपोर्ट तैयार कर प्रस्तुत करेगा। जिसके लिए निम्न आवश्यक व अनिवार्य है।

1. व्यापार संगठन की प्रकृति
2. संबंधित एम्पोरियम के लिए स्थान का निर्धारण
3. किराये का अथवा स्वामित्व
4. अनुबंध सामान (dealt good) की प्रकृति
5. एम्पोरियम के व्यापार का स्त्रोत
6. व्यापारी माल की मार्केटिंग/विनिर्माण में सहकारी संस्थाओं की भूमिका
7. समान/व्यापारी माल के प्राकृतिक उत्पादन व प्रकृति के उपहार की भूमिका
8. खरीददार व विक्रेता के प्रकार
9. समान के फैलाव के तरीकें, न्यूनतम विक्रय सामग्री, माल की डिलवेरी हेतु पेकिंग में उपयोग या इस्तेमाल किए जाने वाले बैग का प्रकार
10. एम्पोरियम पर मूल्य निर्धारण कारक

11. बाजार में उपलब्ध सामान का मूल्य तथा एम्पोरियम में उपलब्ध सामान में मूल्य में अंतर तथा इसके मूल्य परिवर्तन के संभावित कारण
12. प्राकृतिक रूप से उपलब्ध कच्चे माल का प्रकार एवं इसका उत्पादन बनाने में उपयोग
13. उत्पादन में प्रयुक्त तकनीक द्वारा बनाया गया, मशीन द्वारा बनाए गया समान में बाल श्रम का उपयोग किया गया है।
14. क्या उत्पाद पर्यावरण अनूकुल है। (पैकिंग निपटान के संदर्भ में)
15. एम्पोरियम के व्यापार को प्रभावित करने वाले सीजनल कारक यदि हो तो
16. साप्ताहिक व मासिक कार्यदिवस
17. बिलिंग व भुगतान का तरीका नगद, क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, स्वाइप।
18. क्या बिक्री पष्चात् घर पहुंच सेवा उपलब्ध कराते है।
19. क्या एम्पोरियम आप से माल किस्त/अस्थगित भुगतान पर बेचते है।
20. विभिन्न प्रकार के प्रचार अभियान/योजनाएँ।
21. क्या एम्पोरियम में प्रक्रिया हेतु उन्मुखीकरण का उपयोग किया गया।
22. क्षतिग्रस्त/वापसी सामान हेतु नीतियाँ।
23. एम्पोरियम हेतु कोई सरकारी सुविधा है।
24. उपलब्ध/उपयोग की गई भंडार सुविधाएँ।
25. ग्राहको हेतु अतिरिक्त सुविधा।
26. एम्पोरियम द्वारा ग्रहण किया गया कोई कार्पोरेट सामाजिक दायित्व (C.S.R.)
27. क्षेत्र में एम्पोरियम का योगदान।
28. एम्पोरियम व्यवसाय पर पर्यटन का प्रभाव।

टीप :– प्रायोजना हेतु दिये गये विषय मात्र उदाहरण स्वरूप है शिक्षक स्थानीय परिवेश/ पाठ्यक्रम अनुसार विद्यार्थियों को प्रायोजना चयन हेतु पृथक विषय तथा मार्गदर्शन दे सकता है।

.....0.....